नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१६

मौज का रंग



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१६

मौज का रंग

अनुवादक:
संगमलाल मालवीय

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर 302001





सारे नगर में खबर फैल गई कि मशहूर यात्री नजानू और उसके दोस्त अस्पताल में भर्ती हैं। मिली और रोज़ा दौड़-दौड़कर, एक घर से दूसरे घर जा-जाकर यह खबर अपनी सहेलियों को सुना रही थीं। इस तरह एक छुटकी से दूसरी छुटकी को और दूसरी छुटकी से तीसरी छुटकी को यह खबर पहुंचती गई। देखते ही देखते नगर की सारी आबादी अस्पताल की ओर बढ़ चली। हरेक छुटकी किसी न किसी तरह मुसीबत के मारे छुटकों की मदद करना चाहती थी। वे अपने साथ तरह-तरह की ज़ायकेदार चीजें ला रही थीं। किसी के पास स्वादिष्ट कचौड़ियां थीं, तो किसी के पास मुरब्बे और कोई मीठी-मीठी पेस्ट्रियां लिये थीं।

थोड़ी ही देर में अस्पताल की सड़क पर दर्शकों की भीड़ जमा हो गई। इस भीड़ को गेट पर ही रोक दिया गया। आखिर सब अन्दर

कैसे जा सकते थे? मधुरिमा ने अस्पताल के बरामदे में आकर कहा कि हमारे मरीज़ों को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, इसलिए सभी छुटकियां अपने-अपने घर लौट जायें और यहां शोर न करें। लेकिन छुटकियां टस से मस न हुईं। उन्हें तो किसी तरह चुपके से पता चल गया था कि छुटकों का लीडर नजानू अपने दोस्त ट्यूबेश और बाजाबाज़ के साथ अस्पताल से बाहर निकलनेवाला है।

मधुरिमा ने फिर यह सूचना दी कि नजानू को तब तक अस्पताल से जाने नहीं दिया जाएगा, जब तक भीड़ यहां से नहीं हटती। लेकिन छुटकियां कम चतुर न थीं। वे घर लौटने के बजाय अपनी-अपनी सहेलियों के यहां चली गईं, जो अस्पतालवाली सड़क पर बने घरों में ही रहती थीं। नजानू, ट्यूबेश और बाजाबाज़ जब तुषारिका और नीलाक्षी के साथ सड़क पर आए तो उन्हें लगा कि खिड़कियों के पीछे से दर्जनों आंखें उन्हें घूर-घूर कर देख रही हैं। नजानू फूलकर कुप्पा हो गया।

"अजी, कौन है वो बड़े नामवाला नजानू?" अचानक उसे सुनाई दिया।

"वो रहा पीली पतलूनवाला!"

"कौन सा? बड़े कानवाला? अजी, मैं तो उसे कभी नजानू नहीं समझ सकती थी। वह तो निरा बुद्धू दिखता है।"

"सच, दिखता तो बुद्धू सा है, पर आंखों से अक्ल छलकती है।"

एक घर की दूसरी मंज़िल से किसी छुटकी ने नजानू को देखते ही हाथ हिला-हिलाकर स्वागत सा किया। वह खनकती आवाज़ में ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी:

"नजानू ज़िन्दाबाद! नजानू ज़िन्दाबाद!"

यह छुटकी खिड़की से बाहर झुकी हुई थी। बस सड़क पर गिरते-गिरते बची। गनीमत समझो कि बाकी छुटकियों ने ऐन वक्त पर उसकी टांगें पकड़ लीं और उसे झट से अन्दर घसीट लिया।

"छि: अजीब बेशर्मी है! ऐसे तो इस नजानू का दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ सकता है!" हाव-भाव से सख्त, नुकीली ठुड्डी और छोटे चेहरेवाली एक छुटकी ने कहा।



"तुम ठीक कहती हो, बुलबुल," उसकी एक सहेली ने कहा, जिसका ऊपरी होंठ कुछ छोटा-सा था और सफ़ेद दांत चमचमा रहे थे। "अजी, छुटकों को तो हवा भी न लगनी चाहिए कि कोई उनकी तरफ़ ध्यान भी दे रहा है। जब उनकी हरकतें कोई देखेगा ही नहीं, तो खुद शैतानियां भूल जाएंगे।"

"यही तो मैं भी कहती हूं, पूसी," बुलबुल ने हां में हां मिलाई, "इन छुटकों की उपेक्षा करनी चाहिए। अपनी उपेक्षा देखकर तमीज़ से काम लेंगे।"

बुलबुल और पूसी बारी-बारी से छुटकियों के कान में फुसफुसाकर समझाने लगीं कि उड़नबाज़ छुटकों की उपेक्षा करनी चाहिए। इस तरह सभी छुटकियों ने मिलकर यह तय किया कि छुटकों के साथ सख्ती बरती जाये। अगर राह चलते वे कहीं मिल जायें, तो वापस मुड़ लिया जायें या रास्ता काटकर दूसरी तरफ़ चल दिया जायें।

लेकिन जल्द ही छुटकियों का समझौता बेअसर रहा। खासकर जब



उन्हें पता चला कि छुटका ट्यूबेश एक बढ़िया पेण्टर है और बाजाबाज़ एक महान संगीतकार। सभी का जी ललचाया कि क्यों न झटपट बांसुरी सुनी जाये। यूं तो हरित नगर के लोग सिर्फ़ हार्प बजाना ही जानते थे। बांसुरी का नाम उन्होंने पहली बार सुना था। कई लोग तो यह भी नहीं जानते थे कि ऐसा कोई वाद्ययंत्र भी हो सकता है।

जल्द ही छुटकियों को पता चला कि ट्यूबेश और बाजाबाज़ सेब चौक में छुटकी बटनिया के यहां अपना डेरा जमा चुके हैं। बटनिया के घर की दूसरी मंज़िल पर एक खूब लम्बा-चौड़ा कमरा था, जिसमें खूब बड़ी सी खिड़की थी। ट्यूबेश को यह कमरा पसन्द आया क्योंकि यह था भी खूब रोशनीदार। शायद इसीलिये ट्यूबेश और बाजाबाज़ ने यहीं रहने का फ़ैसला किया।

कमरे की खिड़की बाहर सेब चौक की तरफ़ खुलती थी। सेब चौक में अक्सर शाम को सन्नाटा रहता था। लेकिन आज वहां छुटकियों का जमघट लग गया था। वे बांह में बांह डाले, दो-दो का जुट बनाये





इधर-उधर चहलकदमी कर रही थीं। लेकिन वे बीच-बीच में रोशनीदार खिड़की की ओर नज़र बचाकर देख लेती थीं। निश्चय ही वे ट्यूबेश या बाजाबाज़ की खातिर ऊपर नहीं देख रही थीं, बल्कि संगीत सुनने के लिये बेचैन थीं।

रह-रहकर उन्हें खिड़की के पीछे से कभी बाजाबाज़ के संवरे हुए बाल झलक जाते थे, कभी ट्यूबेश की बिखरी हुई ज़ुल्फ़ें। और अब खिड़की के करीब कुछ भी नहीं दिख रहा था। अचानक छुटकियों





ने ट्यूबेश को देखा, जो खिड़की के दासे पर कोहनी टिकाये, ख्यालों में खोया-खोया सा दूर कुछ देख रहा था। उसके बाद बाजाबाज़ दिखाई दिया। वे दोनों किसी गम्भीर मसले पर इधर-उधर देखते हुए हाथ हिला-हिलाकर बातें कर रहे थे। थोड़ी देर में वे खिड़की के पीछे ओझल हो गए।

अब तो छुटकियों की उम्मीद पर पानी फिरता नज़र आया। पर दर्शकों की भीड़ निराश न हुई और वहीं डटी रही। देखते ही देखते बांसुरी का मीठा-मीठा स्वर गूंजने लगा, मानो नदी की लहरों का संगीत हो। बांसुरी का स्वर लयबद्ध था, जैसे लहरों का प्रवाह हो, जो एक के बाद एक उमड़ रहा हो। स्वर लहरियां कभी उछलतीं, कभी यकायक खामोश सी पड़ जातीं, तो कभी हवा में गूंजतीं, एक दूसरे का



पीछा करती हुई धकेलती सी चलती थीं। बांसुरी ने सभी का दिल खुश कर दिया। मानो वह सभी के अंग-अंग में थिरकन पैदा कर रही हो, नृत्य के लिए उत्साहित कर रही हो।

चुपचाप घरों की खिड़कियां खुलने लगीं। सेब चौक की हलचल थम गई। सभी श्रोता मौन थे इस कोशिश में कि कहीं कोई स्वर छूट न जाये।

अन्त में बांसुरी का स्वर थम गया। लेकिन इसी समय सामनेवाली खिड़की से हार्प का स्वर गूंजने लगा। इस वाद्ययंत्र पर वही धुन बजाने की कोशिश की जा रही थी, जो अभी बांसुरी पर थिरक रही थी। किसी की उंगलियां हार्प के तारों पर धुन साधने का प्रयास कर रही







थीं। संगीत की तीव्र धुन धीरे-धीरे धीमी पड़ती गई । और अब बिल्कुल खामोश हो गई। लेकिन इसी क्षण बांसुरी ने जवाबी संगीत छेड़ दिया। अब तो हार्प पूरी रौ में बजाया जाने लगा। शीघ्र ही दूसरा हार्प भी बजने लगा। देखते ही देखते तीसरे हार्प ने भी साथ दिया। संगीत-सरिता बह चली। अब हार्पों का मिला-जुला स्वर कहीं अधिक तेज़ और सुखदायी लगने लगा।

इसी समय नजानू झपटकर ट्यूबेश के लिए रंग और ब्रश ले आया। सेब चौक में उसने एक अनोखा दृश्य देखा। सारा का सारा सेब चौक छुटकियों से खचाखच भरा हुआ था। वे सभी मिलकर इस अनोखे संगीत समारोह का लुत्फ़ उठा रही थीं।

नजानू भी मज़े से संगीत सुन रहा था। वह इतना मस्त था कि एक पैर पर उछलने, थिरकने लगा। लेकिन उसे लगा कि उसकी नृत्य-कला का अपमान किया जा रहा है, कोई उसे देख ही नहीं रहा है। इस कारण वह मायूस होकर दरवाज़े के पीछे ओझल हो गया।



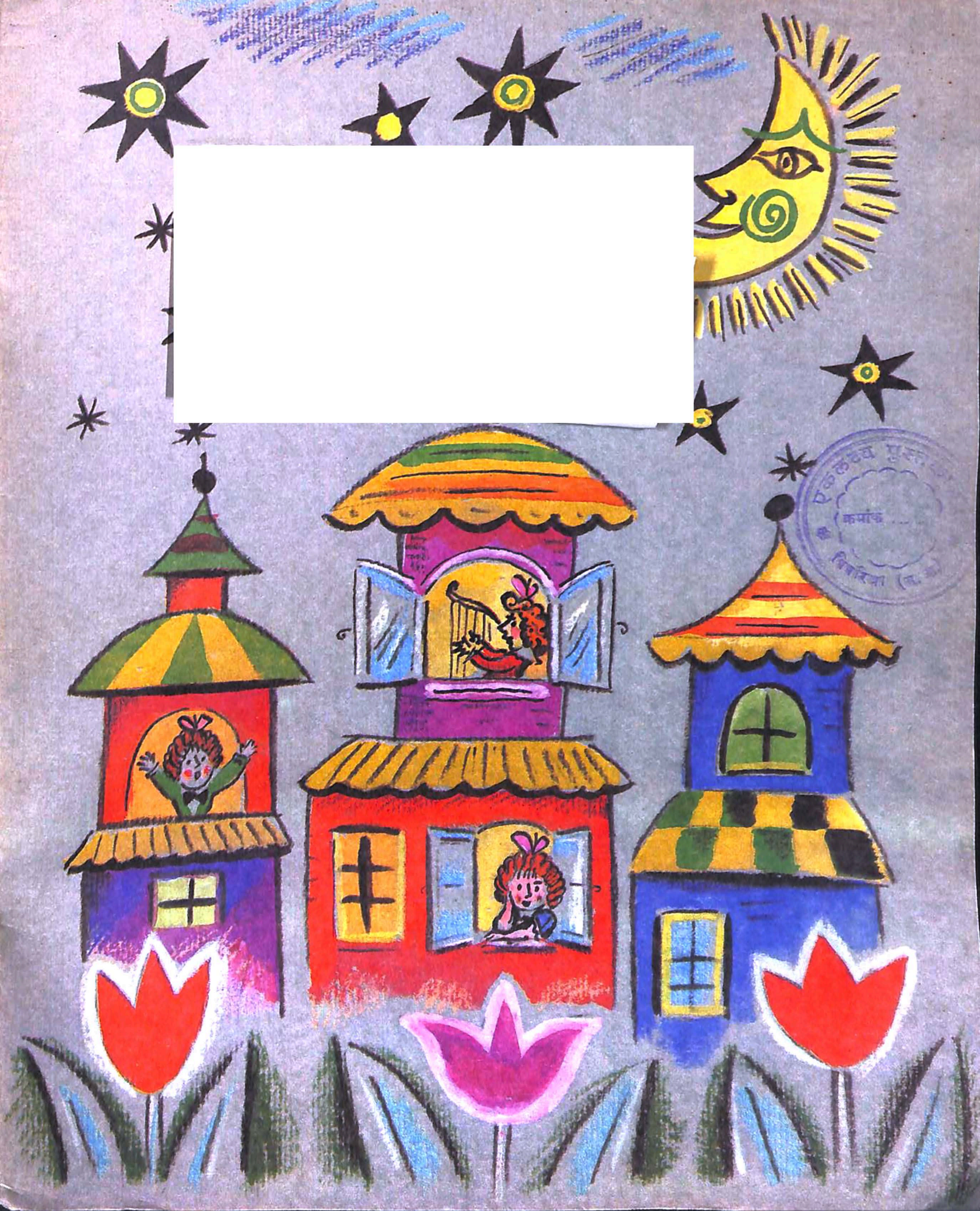
Н. Носов
КОНЦЕРТ
На языке хинди

N. Nosov
THE CONCERT
In Hindi

Для дошкольного возраста

सोवियत संघ में प्रकाशित







प्यारे बच्चो,

नजानू और उसके दोस्तों के रोचक कारनामे आपको ज़रूर पसन्द आये होंगे। नजानू की कहानियों के इस क्रम में फूलनगर के निवासियों के बारे में आप हमारे यहां से प्रकाशित होनेवाली आगामी पुस्तकों में पढ़ेंगे:

सफ़र

पतंग नगर में

ISBN 5-05-000981-0
ISBN 5-05-003228-9